Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, GIF: 2.7282, CIF: 5.647, Volume 09, No. 04, October, 2019, pp. 296-300

विभिन्न शिक्षण विधियों से इतिहास शिक्षण के अध्ययन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (सीकर जिले के सन्दर्भ में)

डॉ. नीतू सिंघल*
पूजा सैनी**

प्रस्तावना

व्यक्ति जिस जगत में रहता है वह गतिशील जगत के उत्पत्ति अंत व लक्ष्य के बारे में जानने की इच्छा व्यक्ति में प्रारम्भ से ही रही है। और इस जिज्ञासा को तृप्त करने का कार्य शिक्षा करती आई है। शिक्षा व्यक्ति के अज्ञान को दूर करने का साधन है। सृष्टि में विधमान सत्य को जान लेने पर ही व्यक्ति अपनी समस्याओं को हल कर पाता है। और शिक्षा ही व्यक्ति को क्षमता प्रदान करती है। जिसके द्वारा वह समस्या में निहित सत्य का ज्ञान प्राप्त कर सके। वह सत्य जो मानव में निहित है। यद्यपि विज्ञान व धर्म दोनों ही सत्य की खोज में संलग्न है। परन्तु दोनो में अंतर है। विज्ञान ब्राह्य सत्य से संबंधित है। जबकि अध्यात्म आंतरिक सत्य का निरूपण करता है मानव के ज्ञान के लिए विज्ञान व अध्यात्म दोनों की ही आवश्यकता होती है। जिससे कि मनुष्य सम्पूर्णता की प्राप्ति कर सके इस हेतु मनुष्य शिक्षा का सहारा लेता है।

शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति व समाज दोनों के ही संदर्भ में है। व्यक्ति के लिए शिक्षा को इसलिए महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि शिक्षा से व्यक्ति का आचरण, विचार व व्यवहार सुसंस्कृत हो जाता है। उसका जीवन उत्तरोतर उत्कृष्ट हो जाता है। इसके फलस्वरूप समाज का विकास स्वतः ही हो जाता है। क्योंकि शिक्षा समाज को नियन्त्रित व संस्कारित करने वाली प्रक्रिया भी है। एक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा किसी उद्देश्य की और उन्मुख होती है। शैक्षिक उद्देश्य ही शिक्षा की दिशा निर्धारण का कार्य करते है। शिक्षा के उद्देश्य एक और तो समाज के आदर्शो, मूल्यों व मान्यताओं को मूर्त रूप देते है।

शिक्षा संस्कृत भाषा के शिक्ष् धातु से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है 'सीखना' अथवा 'सिखाना'। इस अर्थ में एक व्यक्ति सीखने वाला तथा एक सीखाने वाला होता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तर

शिक्षा को विभिन्न स्तरों के माध्यम से भी सिखाया जाता है। जिससे बालक में आत्म विश्वास व अच्छे नागरिक के गुणों का विकास किया जाता है मानव सभ्यता व संस्कृति के विकास के संबंधित अध्ययन शिक्षा के माध्यम से किया जाता है। शिक्षा को समझाने व सिखने व सिखाने के अनेक साधन होते है। अतः विद्यार्थियों को शिक्षा की व्यवस्था अनेक स्तरों पर की गई है। जो निम्न प्रकार से है:–

- प्राथमिक स्तर
- उच्च प्राथमिक स्तर
- माध्यमिक स्तर
- उच्च माध्यमिक स्तर
- उच्च स्तर

* व्याख्याता, एम.जे.आर.पी.वी.वी., जयपुर, राजस्थान।
** अनुसंधानकर्ती, शिक्षा विभाग, एम.जे.आर.पी.वी.वी., जयपुर, राजस्थान।

- **इतिहास विषय का महत्वः–** इतिहास मानव समाज की प्रगति का प्रमाण एवं मानव समाज को समझने का ही नही अपितु बदलने का एक उपकरण है। इतिहास किसी भी राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण विषय है। जिसके द्वारा मानव की विभिन्न कठिनाई व संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। जिनसे जुझकर मानव ने वर्तमान का निर्माण किया है। इतिहास विषय ही मानव प्रकृति के विभिन्न आयामों से हमे परिचित कराता है।
- **इतिहास विषय की शिक्षण विधियाँः–** इतिहास मानव सभ्यता या समाज के सामुहिक अनुभव का प्रतिबिम्बा है। तथा उसे आगे बदलने का रास्ता ढूढंना संभव नहीं है। अतः इतिहास शिक्षक के प्रति विशेष सतर्कता आवश्यक है इसी बात को देखते हुए इतिहास शिक्षण की अनेकों विधियां विकसित हुई है। जिन्हे निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

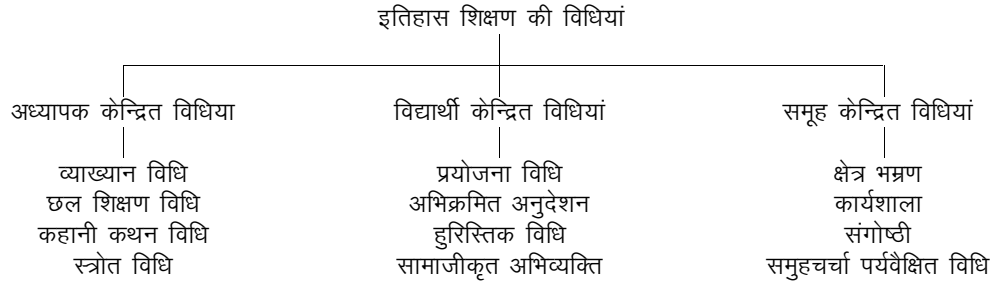

शोध समस्या का औचित्य

प्रस्तुत शोध में इतिहास विषय को सामाजिक विज्ञान के विषयों के अन्तर्गत रखा जाता है। जिसमें संबंधित साहित्य की समीक्षा के पश्चात कह सकते है। कि शिक्षण विधियों पर हुए इन शोधों में अधिकतर शोध विज्ञान विषय पर हुए है। जिसमें भी ज्यादातर शोधों में परम्परागत विधि का किसी नवीन विधि के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

शोध के उद्देश्य

- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ेने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- उच्च माध्यमिक स्तह वह इतिहास विषय में स्त्रोत विधि व पर्यवैक्षित अध्ययन विधि का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि व पर्यवैक्षित अध्ययन विधि का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि के प्रयोग से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि व पर्यवैक्षित अध्ययन विधि के प्रयोग से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर स्त्रोत विधि व पर्यवैक्षित अध्ययन विधि के प्रयोग से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तकनीकी शब्दो की व्याख्या

- **उच्च माध्यमिक स्तर –** उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों से है।
- **शिक्षण विधियाँ –** इतिहास विषय में अध्यापन हेतु प्रयोग में ली जाने वाली शिक्षण विधियों स्त्रोत विधि पर्यवैक्षित विधि है।
- **शैक्षिक उपलब्धि –** विद्यार्थियों द्वारा इतिहास से सम्बन्धित ज्ञान को शैक्षिक उपलब्धि माना गया।
- **विद्यार्थी –** उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा 11 व 12 में विद्यार्थी को माना गया है।

चर

- **स्वतन्त्र चर –** शिक्षण विधि
- **आक्षित चर –** शैक्षिक उपलब्धि

जनसंख्या

प्रयुक्त शोध में सीकर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

न्यादर्श

न्यादर्श के रू‍प में कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा इसका चयन विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से किया जाएगा।

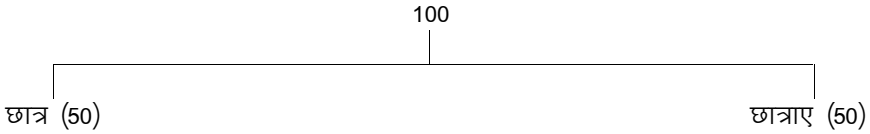

- **शोध विधिः–** प्रयूक्त शोध में प्रायोगिक विधि का प्रयोग किया जाएगा
- **उपकरणः–** प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।
- **सांख्यिकीः–** प्रयुक्त शोध में सांख्यिकी के रूप में टी–टेस्ट विधि का प्रयोग किया जाएगा।
- **विश्लेषण**

परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि द्वारा विद्यर्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

समूह	विद्याार्थी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
प्री–टेस्ट	50	37.84	8.14	1.27	स्वीकृत
स्त्रोत विधि	50	34.27	7.18		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान – 1.98

0.01 सार्थकता स्तर t का मान – 2.63

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.1 के अनुसार प्री–टेस्ट के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 37.84 व मानक विचलन 8. 14 है तथा स्त्रोत विधि के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 34.27 व मानक विचलन 7.18 है। इस प्रकार इन दोनों माध्यमानों से प्राप्त ही मूल्य 1.27 है। सार्थकता स्तर पर जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी–मूल्य 1.98 व 2.63 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि द्वारा अध्ययन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी

समूह	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- test	स्वीकृत / अस्वीकृत
प्री–टेस्ट	25	33.98	7.44	1.56	स्वीकृत
स्त्रोत विधि	25	29.35	7.07		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान – 2.01

0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान – 2.68

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.2 के अनुसार प्री–टेस्ट के छात्रों का प्राप्त माध्यमान 33.98 व मानक विचलन 7.44 है तथा स्त्रोत विधि के विद्यार्थियों का प्राप्त मध्यमान 29.35 व मानक विचलन 7.07 है। इस प्रकारइन दोनों मध्यमानों से प्राप्त ही मूल्य 1.56 है। जो सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी–मूल्य 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि द्वारा अध्ययन से छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि के प्रयोग से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ेगी।

समूह	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
प्री–टेस्ट	25	31.90	8.11	0.47	स्वीकृत
स्त्रोत विधि	25	31.25	6.67		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का मान– 2.01

0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान– 2.68

विश्लेषण

तालिका संख्या 4.3 के अनुसार प्री–टेस्ट के छात्राओं का प्राप्त मध्यमान 31.90 व मानक विचलन 8.11 है तथा स्त्रोत विधि के छात्राओं का प्राप्त मध्यमान 31.25 व मानक विचलन 6.67 है इस प्रकार इन दोनों मध्यमानों से अन्तर का प्राप्त टी–मूल्य 0.47 है जो सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी–मूल्य 2.01 एवं 2. 68 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि द्वारा अध्ययन से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय मै स्त्रोत विधि द्वारा अध्ययन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि द्वारा अध्ययन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में स्त्रोत विधि द्वारा अध्ययन से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में पर्यवेक्षित विधि द्वारा अध्ययन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।

- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में पर्यवेक्षित विधि द्वारा अध्ययन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय में पर्यवेक्षित विधि द्वारा अध्ययन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर स्त्रोत विधि व पर्यवेक्षित अध्ययन विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का अन्तर नहीं होता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर स्त्रोत विधि एवं पर्यवेक्षित अध्ययन विधि के प्रयोग से छात्रों की शैक्षिक उलब्धि में सार्थकता का अन्तर नहीं होता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर स्त्रोत विधि व पर्यवेक्षित अध्ययन विधि के प्रयोग से छात्राओं की शैक्षित उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

~ Adams, W.K., Reid, S., LeMaster, R., McKagan, S.B., Perkins, K.K., Dubson, M., and Wieman, C.E. (2008b). A study of educational simulations part II—Interface design. Journal of Interactive Learning Research, 19(4), 551-577.

~ Barab, S.A., Arici, A., and Jackson, C. (2005). Eat your vegetables and do your homework: A design based investigation of enjoyment and meaning in learning. Educational Technology, 45(1), 15-20.

~ Green, C.S., and Bavelier, D. (2006). Effect of action video games on the spatial distribution of visuospatial attention. Journal of Experimental Psychology: Human Perception and Performance, 32(6), 1,465-1,468.

~ Miller, J.D. (2002). Civic scientific literacy: A necessity for the 21st century. Public Interest Report: Journal of the Federation of American Scientists, 55(1), 3-6.

~ Williamson, D.M., Bejar, I.I., and Mislevy, R.J. (2006). Automated scoring of complex tasks in computer-based testing. Mahwah, NJ: Lawrence Erlbaum.

♦❐♦